हिंदी भवन संदेश

(हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना-पत्र)
लोंग माउंटेन – मॉरीशस

NEWSLETTER

Website : hindipracharinisabha.com --- E.Mail: hindipracharinisabha@hotmail.com

भाषा गई तो संस्कृति गई

YEAR: 10 ISSUE: 28 JULY 2018 *Published by: Hindi Pracharini Sabha - Long Mountain, Mauritius* ISSN 1694-3481

संपादकीय

हिंदी से नौकरी की संभावनाएँ !

हमारे सामने हिंदी भाषा को लेकर नौकरी पाना एक बहुत बड़ी चुनौती बनती जा रही है । इसका सामना करना सहज नहीं है। आज कई ऐसे छात्र हैं जो हिंदी की डिग्रियाँ पाकर कई वर्षों तक बेकार बैठे हुए हैं । इसीलिए आज हिंदी में उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर होने से पहले नौकरी की मंडी पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है । इसी वजह से उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवालों की संख्या में अब गिरावट आ रही है और यह स्वाभाविक है कि हमें आजीविका की ओर ध्यान देना चाहिए । ऐसी स्थिति होते हुए भी हर वर्ष माध्यमिक स्तर पर हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा आयोजित परीक्षाओं में दो हज़ार से ढाई हज़ार तक छात्र भाग लेते हैं ।

हिंदी रोज़ी-रोटी का ज़रिया बन गयी तो ऐसी गंभीर स्थिति सामने नहीं आएगी । हमारे देश में हिंदी भारतीय संस्कृति की संवाहिका बनी, इसमें कोई संदेह नहीं । धर्म-संस्कृति की वजह से ही हिंदी हमारे देश में फूली-फली । आज भी लोग धर्म तथा संस्कृति को बचाए रखने के लिए अपने बच्चों को हिंदी भाषा सीखने पर ज़ोर दे रहे हैं । यह सत्य है कि हिंदी सीखने से हम अपने धर्म-संस्कृति को अच्छी तरह से समझ पाते हैं । हमारे धर्मग्रंथों में पाई जाने वाली मानव मूल्य की शिक्षा पाने तथा अपने जीवन में उतारने से ही बच्चे कल के अच्छे नागरिक बन पाएँगे ।

नौकरी पाने के विषय पर गम्भीरता से विचार करना अब आवश्यक हो गया है । मॉरीशस के विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के लिए विषयों को एक बार फिर से विचार-विनिमय होना चाहिए । हिंदी के साथ अन्य विषय जैसे प्रशासन, प्रौद्योगिकी, व्यापार, संचार, विज्ञान आदि को जोड़ना अब समय आ गया है । इससे नौकरी की मंडी में पहुँचना ऐसे प्रमाणपत्र वालों के लिए आसानी होगी ।

अगले विश्व हिंदी सम्मेलन से हमें यह अपेक्षा है कि इस दिशा में कोई-न-कोई रास्ता ज़रूर निकले जिससे हिंदी को लेकर नौकरी की समस्या का हल हो जाए और हिंदी का पताका हमेशा मॉरीशस में लहराता रहे ।

यंतुदेव बुधु
प्रधान-हिंदी प्रचारिणी सभा

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन की तैयारियाँ

मॉरीशस में होनेवाले ग्यारहवें विश्व हिंदी सम्मेलन की तैयारियाँ ज़ोर-शोर से चल रही है । ये तैयारियाँ मॉरीशस के साथ-साथ भारत में भी हो रही हैं । अभी हाल में भारत की विदेश मंत्री श्रीमती माननीया सुषमा स्वराज अफ्रीका के दौरे पर जाती हुई रविवार ता. 3 जून को मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय के नव-निर्मित भवन में विभिन्न संस्थाओं के अधिकारियों से एक भेंटवार्ता की । उनके साथ शिक्षा मंत्री श्रीमती लीला देवी दुखन लछुमन भी थीं । हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान को भी इस अवसर पर भारत की विदेश मंत्री से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ और उनसे दुर्गा हस्तलिखित पत्रिका तथा सभा के बारे में बात करने का मौका मिला ।

मॉरीशस में सम्मेलन को लेकर विश्व हिंदी सचिवालय तथा शिक्षा मंत्रालय द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय कई बैठकें लगाई जा रही हैं। आजकल रेडियो तथा टीवी पर भी सम्मेलन से संबंधित कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। हमें देश के हिंदी विद्वानों को सुनने का अवसर प्राप्त हो रहा है । इससे मॉरीशस में हिंदीमय वातावरण महसूस कर रहे हैं । हमारे छात्रों को मॉरीशस के इतिहास के बारे, गिरमिटया मज़दूर के आगमन तथा हिंदी के पठन-पाठन की शुरुआत के बारे में ज़्यादा जानने का अवसर मिल रहा है ।

आज हिंदी विश्वभर में अपना अस्तित्व दर्ज करा रही है। इसके सीखने वालों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है । हिंदी को विश्वभर में फैलाने में गिरमिटिया मजदूरों का बहुत बड़ा हाथ रहा है । मॉरीशस में सम्मेलन के होने से ज़्यादा-से-ज़्यादा मॉरीशसवासी इसमें सम्मिलित हो पाएँगे जबकि विदेश में होनेवाले सम्मेलनों में दस-बीस लोग ही सम्मिलित हो पाते हैं । तो हमें यह एक सुनहरा अवसर मिल रहा है । हमें विश्व के सुविख्यात साहित्यकारों, हिंदी-विद्वानों तथा हिंदी-विशेषज्ञों को सुनने व मिलने का अवसर प्राप्त होगा। केवल उद्घाटन समारोह के लिए पूरी जनता भाग ले सकते हैं पर आयोजित सत्रों में भाग लेने के लिए ऑन-लाईन पंजीकरण आवश्यक है। हम चाहते हैं कि हिंदी के इस महाकुंभ में सभी हिंदी-प्रेमी सम्मिलित हों ।

लीली देनेवा का हिंदी भवन-दौरा

महात्मा गांधी संस्थान के आमंत्रण पर आई हुई श्रीमती लीली देनेवा ने शनिवार 28 अप्रैल को हिंदी भवन का दौरा किया । वे महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभागाध्यक्ष श्री गुलशन सुखलाल के साथ यहाँ पधारे । लीली जी सोफ़िया विश्व विद्यालय बुलगारिया में हिंदी पढ़ाती है । लीली जी ने पूरे रूप से हिंदी भवन का चक्कर लगाया । वे हिंदी भवन विद्यालय के अध्यापकों तथा छात्रों से मिली, यहाँ का कार्यालय देखा तथा पुस्तकालय देखकर अति प्रसन्न हुई । खासकर के हस्तलिखित दुर्गा पत्रिका के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाही और पत्रिका के पन्नों को पलटकर देखने का आनंद लिया । वे पत्रिका के बारे में जानकारी पाकर बहुत प्रभावित हुई । उन्होंने हिंदी भवन में आने तथा सबसे मिलने की खुशी ज़ाहिर की । सभा के प्रधान ने उन्हें सभा के प्रकाशन की कुछ प्रतियाँ उन्हें भेंट की । वे 'सुगम हिंदी' कड़ी एक से छह तक पाठ्य-पुस्तकें देखकर अति प्रसन्न हुई ।

बैठकाओं का दौरा

ता. 21 अप्रैल को सभा के प्रधान तथा कोषाध्यक्ष प्रो. उमेश कुमार सिंह के साथ देश के तीन बैठकाओं का दौरा किया । सबसे पहले 'सरस्वती हिंदी पाठशाला', कारच्ये मिलितेर गए जहाँ पर सभा के मंत्री श्री धनराज शम्भु जी भी कार्यरत हैं । प्रो.उमेश जी सभी शिक्षकों तथा छात्रों से मिले तथा छात्रों द्वारा प्रार्थनाएँ तथा कविताएँ प्रस्तुत की गईं । उसके बाद प्रोफ़ेसर जी ने बच्चों को संबोधित किया । वे वहाँ की पढ़ाई से अति प्रसन्न हुए ।

एक घंटे के बाद वहाँ से निकले और लालमाटी गाँव पहुँचे जहाँ पर दो हिंदी संस्थाओं का दौरा हुआ । हम पहले 'हिंदी सेवा संस्थान' पहुँचे तथा वहाँ से उसी गाँव के हिंदी साहित्य सम्मेलन संस्था देखने गए । इन दोनों स्कूलों में प्रो.उमेश जी शिक्षकों और छात्रों से मिले और शिक्षण से संबंधित जानकारियाँ लीं । उमेश जी हिंदी प्रचारिणी सभा से पंजीकृत इन स्कूलों का दौरा करके फूले न समाए। उनके अनुसार यहाँ पर हिंदी का प्रचार सही तरीके से हो रहा है । वैसे प्रो.उमेश जी आई. सी. सी. आर. हिंदी पीठ (Hindi Chair) के रूप में आजकल महात्मा गांधी संस्थान में कार्यरत हैं, उनकी नियुक्ति भारत सरकार की ओर हुई है ।

मॉरीशस में विश्व हिंदू सम्मेलन

ता. 19 और 20 अप्रैल को हिंदू हाऊस के सहयोग से तथा श्री देवत्तम संतोकी के नेतृत्व में विश्व हिंदू सम्मेलन का आयोजन इंदिरा गांधी सांस्कृतिक केंद्र में हुआ । इस आयोजन में पूरे विश्व के हिन्दू-प्रतिनिधि आए हुए थे । इस दौरान विश्व हिंदू फेडेरेशन के प्रधान डॉ.अजय सिंह तथा सम्मेलन के आयोजक श्री देवत्तम संतोकी ने 16 अप्रैल की शाम को तीन बजे हिंदी भवन का दौरा किया । सभा के प्रधान तथा कोषाध्यक्ष से बातचीत के दौरान डॉ.अजय सिंह सभा की गतिविधियों से अवगत हुए । उन्होंने यहाँ हो रहे प्रचार कार्यों की सराहना की ।

इतिहास के पन्नों से

हिंदी प्रचारिणी सभा के वर्तमान मान्य प्रधान बृजलाल धनपत जी का जन्म 23 जून 1912 में लेमारियान गाँव में हुआ है। आज बृजलाल जी 106 वर्ष के हैं और उनका स्वास्थ्य ठीक बताया जाता है । मजदूरी करते हुए धनपत जी सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों के लिए समय निकाल लेते थे । उनका बड़ा सौभाग्य रहा कि वे 'तिलक विद्यालय' के संस्थापकों में से हैं जो संस्था बाद में 'हिंदी प्रचारिणी सभा' से पंजीकृत हुई । सभा द्वारा प्रकाशित 'दुर्गा' हस्तलिखित पत्रिका में उनका बड़ा योगदान रहा है जिसमें उनकी दिलचस्प रचनाएँ हैं । 1935 की 'दुर्गा' पत्रिका के प्रथम अंक में उनका "हम कैसे हैं " नामक एक सुंदर लेख है जो उन्होंने 'बाबा व्यास' छद्म नाम से लिखा है ।

1940 में वे तब काँ फूकरो, फेनिक्स रहने चले गए जब उन्होंने रामनन्दन परिवार की एक लड़की से शादी की। उनके पाँच बच्चे हुए, चार बेटे और एक बेटी । उनके बड़े बेटे अब 76 वर्ष के हैं । दूसरा बेटा माहेबर्ग गाँव में रहते हैं । तीसरा लड़का अपने पिता के साथ में रहता है और उनका सबसे छोटा बेटा डाक्टर हैं जो विदेश में रहते हैं ।

चाचा धनपत कृषि मंत्रालय के जंगल विभाग के कर्मचारी थे । उसी मंत्रालय में उनकी पदोन्नति हुई और अवकाश प्राप्त करने तक वहीं कार्यरत रहे । अवकाश प्राप्ति के बाद भी वे सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहे । शाकाहारी होते हुए वे साधारण जीवन जीते हैं, शराब और सिगरेट को अब तक हाथ नहीं लगाया । उनको स्वास्थ्य की कोई समस्या नहीं है और उन्होंने अभी-अभी अपनी 106 वीं वर्षगाँठ मनाई ।

डॉ. नूतन पांडे, द्वितीय सचिव भारतीय उच्चायोग चाचा धनपत के जीवन से प्रभावित होकर उनसे एक भेंट वार्ता के लिए सभा के प्रधान और कोषाध्यक्ष के साथ उनके निवास-स्थान पधारे थे। धनपत जी ने उनके सभी प्रश्नों का बड़ी प्रसन्नता के साथ उत्तर दिया । नूतन जी ने चाचा धनपत जी के जीवन पर एक संस्मरण लिखा है ।

कविता-वाचन प्रतियोगिता 2018

इस वर्ष की कविता-वाचन प्रतियोगिता के अन्तिम चरण शनिवार नौ जून को हिन्दी भवन के सुरुज प्रसाद मंगर भगत सभागार में सम्पन्न हुआ । इस अंतिम चरण के लिए बीस प्रतियोगियों को चुना गया था जिन में दस को हिंदी दिवस के अवसर पर पुरस्कृत किए जाएँगे । इस प्रतियोगिता का आयोजन वार्षिक होता है जिनमें परिचय व प्रथमा तथा फोर्म वान व फोम टू के छात्रों को शामिल किया जाता है ।

इस अंतिम चरण के निर्णायक मंडल के सदस्य थे- डॉ.विनय गुदारी, प्रो. आभा सिंह तथा सुश्री अंजलि चिंतामणि । ये तीनों विद्वान महात्मा गांधी संस्थान में कार्यरत हैं ।

प्रथम स्थान प्राप्त विजेता को तीन हज़ार नकद तथा एक स्मृति-पट प्राप्त होगा, द्वितीय को दो हज़ार और तृतीय को हज़ार रुपये दिए जाएँगे । कविता-वाचन प्रतियोगिता के नतीजे इस प्रकार हैं :

1.	रामसहाय	सहर्ष	कलानिकेतन हिंदी पाठशाला
2.	बुद्धि	कृतिशा	राजकुमार एस.एस.एस
3.	दोबी	विदुषी	सरस्वती हिंदी पाठशाला-कारच्ये मिलितेर
3.	सीता	निलेश	एम.जी.एस.एस. फ्लाक

रन्नू	यजना	कन्या हिंदी पाठशाला	चौथे स्थान पर
बिजमोहन	यज्ञयुक्ता	सरस्वती हिं. पाठशाला-कारच्ये मिलितेर	
जीता	युशिका	सरस्वती हिंदी पाठशाला-वाक्वा	
महाजन	लवनिया	सोदनाक एस.एस.एस	
रंगलाल	मानवस्वी	सरस्वती संस्थान-ग्राँ ब्वा	
जानकी	श्रद्धा	रविन्द्रनाथ टागोर संस्थान	
बुदना	हर्षिता	द्रुपनाथ रामफल एस.एस.एस	

बाकी सात विजेताओं को चौथा स्थान प्राप्त हुआ है । इन्हें सांत्वना पुरस्कार के रूप में 500 रुपये नकद तथा पुस्तकें दी जाएँगी ।

स्थापना-दिवस 2018

हिंदी प्रचारिणी सभा का स्थापना-दिवस शनिवार 23 जून को मनाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत सभा के प्रमुख दाता श्री राम-दास रामलखन जो गिरधारी भगत से जाने जाते थे की प्रतिमा पर माल्यापर्ण से हुई । इस अवसर पर छात्रों का कार्यक्रम होता है और हिंदी भवन का कोई छात्र ही की प्रस्तुति होती है। इस अवसर पर एक विशेष साहित्यकार का चयन होता है और उनके जीवन व कृतियों पर गोष्ठी होती है। इस वर्ष साहित्यकार के रूप में डॉ. इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ पर गोष्ठी हुई और डॉ. बीरसेन जगासिंह अवसर के विशेष वक्ता थे । छात्रों को सुनने के बाद डॉ. जगासिंह ने भोला जी के साहित्य-सृजन पर अपना विचार दिया। कार्यक्रम लगभग दो घंटे का रह । कार्य-क्रम के प्रस्तोता छात्र मोती था । बारी-बारी से छात्रों ने अपनी-अपनी तैयारी प्रस्तुत की । उसके पश्चात् सबने डॉ. जगासिंह को ध्यानपूर्वक सुना। उन्हों-ने साहित्यकार भोला जी की कृतियों की हर विधा पर छात्रों को जानकारियाँ प्रदान कीं। सभागार में हिंदी भवन विद्यालय के छात्र, शिक्षक, सभा के कार्यकारिणी के सदस्य तथा हिंदी प्रेमी उपस्थित थे । इस गोष्ठी से छात्र लाभांवित हुए ।

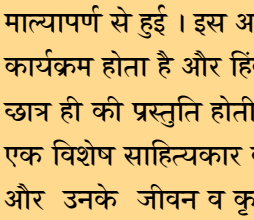

श्रद्धांजलि

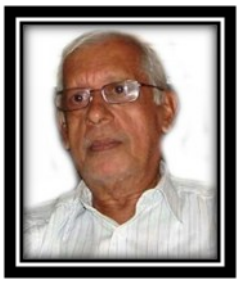

सभी हिंदी प्रेमियों की ओर से दिवंगत डॉ. अभिमन्यु अनत को श्रद्धांजलि पेश करते हैं। 4 जून 2018 को उनके निधन की खबर से साहित्य जगत को सदमा और क्षति पहुँची, पर साहित्य के इतिहास में वे हमेशा अमर रहेंगे ।

हिंदी प्रचारिणी की संभावित गतिविधियाँ

कार्यशाला उत्तमा	शुक्रवार 03 अगस्त
हिंदी दिवस	शनिवार 25 अगस्त
परीक्षाएँ : छठी	शनिवार 15 सितम्बर
प्रवेशिका	शनिवार 10 नवंबर
सम्मेलन	17 - 21 दिसंबर
समावर्तन समारोह	शनिवार 08 दिसंबर

निबंध लेखन प्रतियोगिता 2018

हिंदी दिवस 2018 के उपलक्ष्य में

हिंदी प्रचारिणी सभा

"राष्ट्रीय हिंदी निबन्ध-लेखन प्रतियोगिता" का आयोजन कर रही है ।

नियमावली :

- निबन्ध देवनागरी लिपि में होना चाहिए। प्रतियोगी को 16 से 25 के बीच की उम्र का होना चाहिए ।
- निबन्ध लगभग 1000-1500 शब्दों के बीच होना चाहिए ।

निबन्ध का शीर्षक :

"मॉरीशस में हिंदी भाषा का उत्थान कैसे हो "

- प्रतियोगी को अलग पन्ने पर छद्म नाम (pen name), पूरा नाम, पूरा पता, उम्र तथा फ़ोन नं. अंग्रेज़ी में लिखकर अलग लिफ़ाफे में निबन्ध के साथ भेजना होगा । निबन्ध-वाले पृष्ठ पर भी छद्म नाम लिखना चाहिए ।
- जूरी का निर्णय अंतिम होगा ।
- निबन्ध भेजने की अंतिम तिथि 30 सितम्बर ।
- सभा को श्रेष्ठ निबन्ध प्रकाशित करने का अधिकार होगा।

पुरस्कार इस प्रकार हैं :-

प्रथम - 4000 हज़ार रुपये, प्रमाण-पत्र एवं पुस्तकें
द्वितीय - 3000 " " "
तृतीय - 2000 " " " "

पुरस्कार समावर्तन समारोह के अवसर पर दिसम्बर 2018 को हिंदी भवन, लोंग माउंटेन में प्रदान किए जाएँगे ।

अधिक जानकारी के लिए इस नम्बर पर संपर्क करें : 2452112

हिंदी भवन
लोंग माउंटेन